पुरोवाक्

उपनिषद्-विद्या मूलतः अध्यात्म विद्या और उपनिषद्-दर्शन आत्मदर्शन ही प्रतीत होता है । पाश्चात्य विद्वानों ने सम्भवतः इसी गम्भीर चिन्तन को ध्यान में रखकर इसे रहस्यमय-विद्या का नाम दिया था । किन्तु यह सोचना हमारी भूल है कि संसार को जाने बिना हम आत्मा को जान सकते हैं । स्वयं उपनिषद् भी प्रेयस् और श्रेयस् दोनों का आश्रय लेने पर गन्तव्य तक पहुँचने का उपदेश देती हैं । श्रेयस् को अपनाने के लिए प्रेयस् को जानना व समझना अत्यन्त आवश्यक है । आत्मविषयक जिज्ञासा मानव में स्व-भाव से ही विद्यमान होती है और इसी जिज्ञासा की पूर्ति के लिए मुख्यतः उपनिषद् ग्रन्थों का अध्ययन, अध्यापन किया जाता रहा है ।

धार्मिक और आध्यात्मिक अभिरुचि होने के साथ साथ अन्वेषणात्मक दृष्टि से भी जब उपनिषदों का अध्ययन किया तो ज्ञात हुआ कि उनमें संसार की सृष्टि से सम्बन्धित अनेक विषय पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं । विषय का और अधिक गम्भीर चिन्तन करने का अवसर प्राप्त हो सके इसलिए उपनिषदों में सृष्टि विषयक तथ्यों पर शोध करने की अन्तः प्रेरणा प्राप्त हुई । जिसके फलस्वरूप 'मुख्य उपनिषदों में सृष्टि प्रक्रिया का दार्शनिक विवेचन "विषय लेकर प्रस्तुत अध्ययन प्रारम्भ किया गया है ।

यद्यपि उपनिषदों की संख्या अनन्त है और शोध कार्य की सीमाओं के अन्तर्गत सभी का ग्रहण नहीं किया जा सकता था, इसीलिए इस शोध-कार्य हेतु उन ग्यारह मुख्य उपनिषदों का आश्रय लिया गया है जिन पर आद्य शङ्कराचार्य का भाष्य उपलब्ध है तथा डॉ० राधाकृष्णन् ने भी जिन्हें मुख्य उपनिषदों की कोटि में स्वीकार किया है ।

विषय के गहन और गम्भीर अध्ययन हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को मुख्य रूप से छः अध्यायों में विभाजित किया गया है । मुख्य अध्यायों के पूर्व भूमिका में प्रमुख उपनिषदों का सामान्य रूप से परिचय देने की चेष्टा की गई है ।

प्रथम अध्याय में इस तथ्य की उद्भावना हुई है कि औपनिषद् सृष्टि-विद्या एवं प्रक्रिया के बीज वैदिक साहित्य विशेषतः ऋग्वैदिक सृष्टि विज्ञान में ही समुपलब्ध होते हैं । ऋग्वेद में प्राप्त विभिन्न तत्वों को विभिन्न उपनिषदों में पृथक्-पृथक् व्याख्यायित किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में सृष्टि के मूलकारण (परमकारण) पर विचार किया गया है । मुख्य उपनिषदों में प्रधानतया ब्रह्म अथवा आत्मा को सृष्टि का परम कारण स्वीकार किया गया है । यद्यपि उसके नाम भिन्न भिन्न प्राप्त होते हैं , किन्तु 'वाचारम्भणो विकारो नामधेयम् "- के अनुसार वे सभी नाम एक ही मूल तत्व को लक्षित करते हैं ।

तृतीय अध्याय में सृष्टि के प्रयोजन पर चिन्तन किया गया है । मुख्य उपनिषदों में प्रमुखतः परमात्मा के ईक्षण (कामना अथवा संकल्प), जीव की कर्मफल सम्प्राप्ति , परमात्मा के सामर्थ्य प्रदर्शन एवं स्वभाव आदि की सृष्टि के प्रयोजन के रूप में प्रतिष्ठापना की गई है ।

चतुर्थ अध्याय में लोक विभाग एवं स्थूल शरीरमय जीव - विभाग का विस्तृत विवेचन किया गया है । लोक विभागान्तर्गत इहलोक, स्वर्गलोक भुवः लोक, देवलोक, द्युलोक एवं ब्रह्मलोक आदि का उल्लेख प्राप्त होता है ।जीव-विभाग में देव, असुर, मनुष्य, पशु एवं पक्षी आदि का विशेष विवरण उपलब्ध हुआ है ।

पंचम अध्याय का विषय सृष्टि की क्रमिक प्रक्रिया पर अवलम्बित है । उक्त उपनिषदों में सृष्टि की क्रमिक प्रक्रियाओं में पर्याप्त अन्तर होते हुए भी उनमें कुछ साम्य भी दृष्टिगोचर होता है ।

छटे अध्याय में औपनिषद सृष्टि प्रक्रिया के पौराणिक - सृष्टि प्रक्रिया एवं सांख्य, शैव, तथा वेदान्तिक सृष्टि प्रक्रिया पर परिलक्षित होने वाले प्रभाव का वर्णन किया गया है । पुराण एवं उक्त अन्य दर्शनों की सृष्टि-प्रक्रिया उपनिषदों से पूर्णतःप्रभावित है । दूसरे शब्दों में विभिन्न प्रतीकों को आधार बनाकर औपनिषद सृष्टि प्रक्रिया को ही वहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

उक्त शोधकार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व मैंने उपर्युक्त ग्यारह मुख्य उपनिषदों का आद्योपान्त अध्ययन करने के लिए अनेक ग्रन्थों व महानुभावों की सहायता ली है जिसमें आद्य शङ्. कराचार्य कृत शांकरभाष्य एवं गीता प्रेस गोरखपुर से सम्पादित उपनिषद् अंक की विशिष्ट भूमिका रही है । इन ग्रन्थों ने एक ओर जहाँ मुझे उपनिषदों का अर्थ समझने में सहयोग दिया वहां दूसरी ओर मेरी औपनिषद सृष्टि प्रक्रिया की जिज्ञासा को बलवती बनाया । उपनिषदों एवं दर्शन से सम्बद्ध जिन अन्य समालोचनात्मक ग्रन्थों से मेरे शोध-कार्य का मार्ग प्रशस्त हुआ है उनमें डॉ० राधाकृष्णन, रामचन्द्र दत्तात्रेय रानाडे, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, डॉ० राममूर्ति शर्मा तथा पाश्चात्य विद्वान् मैक्स-मूलर , ए. बी. कीथ, मैक्डानल, जे०म्यूर एवं डायसन आदि की रचनाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । इन सभी विद्वानों के प्रति भी मैं अपनी श्रद्धा अभिव्यक्त करना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने मेरे शोध-कार्य के मार्ग में दीपस्तम्भ का कार्य किया है ।

इस शोध कार्य को आरम्भ करने में मैं कभी भी सक्षम न हो पाता यदि संस्कृत एवं पालि विभाग के प्राध्यापक-गण मेरा मार्ग दर्शन न करते। मैं मुक्त हृदय से उनका धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे इस कार्य को करने के लिए सामर्थ्य प्रदान की ।

इस कार्य को एक विशिष्ट रूपरेखा, दार्शनिक ,आलोचनात्मक तथा विश्लेषणात्मक आधुनिक शैली के माध्यम से प्रस्तुत करने के लिए मेरा जो मार्ग दर्शन डॉ० सुधा जैन ने किया तथा समय समय पर आने वाली कठिनाईयों का समाधान करके उसे इस रूप में प्रस्तुत करने के लिए मुझे जो सहयोग दिया उसके लिए मैं उनका विशेष आभारी हूँ ।

मैं अपने परम पूज्य गुरु जनों के प्रति जिनमें श्रद्धेय आचार्य श्री जयदेव शास्त्री , स्वामी दीक्षानन्द एवं डॉ० बलदेवराज शर्मा के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं , हृदय से आभार प्रकट करता हूँ क्योंकि इन्हीं महानुभावों के आशीर्वाद का सम्बल लेकर मैं इस कार्य को सम्पन्न करने में सफल हो सका हूँ । मैं अपने परमप्रिय शिष्य सुशील कुमार मक्कड़ एवं कृष्ण-कुमार मक्कड़ खरबन्दा तथा अपनी धर्मपत्नी उषा के उपकार को विस्मृत नहीं कर सकता जिन्होंने उक्त शोध-कार्य की सामग्री संकलित करने में सह-योग देने के साथ साथ समय समय पर मेरा उत्साह वर्धन भी किया ।

मेरा यह कार्य कभी भी पूर्ण न हो पाता यदि इस कार्य में सहायक ग्रन्थों की उपलब्धि महर्षि दयानन्द विश्व-विद्यालय, रोहतक के पुस्तकालय के अधिकारी मुझे न कराते । उन्होंने इस सम्बन्ध में समय समय पर मुझे अपेक्षित पुस्तकों की उपलब्धि कराके इस कार्य की पूर्ति में पूर्ण सहयोग दिया। मैं उनका विशेष धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ ।

अन्त में मैं उन सभी लेखकों , सम्पादकों , इतिहासकारों, आलोचकों , मुद्रणकर्ताओं तथा अनुसंन्धाताओं का आभारी हूँ जिनके ग्रन्थों के माध्यम से मैं इस कार्य को करने में सक्षम हुआ हूँ । यदि उनके ये कार्य मुझे उपलब्ध न होते तो आज किसी भी अवस्था में मैं इस कार्य को अपने अनुसन्धान का विषय बनाने में सफल न होता । मैं पुनः पुनः उनका धन्यवाद करता हूँ । पं० चन्द्रशेखर शर्मा का भी विशेष आभारी हूँ जिन्होंने अल्प समय में त्रुटिहीन टंकण-कार्य पूरा करके मेरी सहायता की है ।

मेरे इस प्रयास में त्रुटियां भी सम्भव हैं तदर्थ मैं विद्वद -वृन्द से क्षमायाचना करूंगा कि वे इस क्षेत्र में मेरा प्रथम प्रयास जानकर मुझे अपने वैदुष्य निकष का लक्ष्य नहीं बनाएंगे ।

विनीत

सुभाष चन्द्र

दिनांक